सरसों के मुख्य रोग व उनकी रोकथाम

रोगों के लक्षण

काले धब्बों का रोग (आल्ट्रनेरिया ब्लाईट)

पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में बढ़ कर काले एवं बड़े आकर के हो जाते हैं व इन धब्बों में गोल छल्ले साफ नजर आते हैं। तने तथा फलियों पर भी गोल गहरे भूरे रंग के धब्बे बनते हैं जो बाद में लम्बे आकार के हो जाते हैं।

काले धब्बों का रोग

सफेद रतुआ (व्हाईट रस्ट)

पत्तियों की निचली सतह पर चमकीले सफेद उभरे हुए धब्बे बनते हैं। पत्तियों की ऊपरी सतह पीली पड़ जाती हैं और पत्तियाँ झुलसकर गिर जाती हैं। सफेद धब्बे तने तथा फलियों पर भी दिखाई देते हैं। इस रोग की दूसरी अवस्था "स्टेग हैड" सबसे घातक है जिसमें फूल विकृत आकर के हो जाते है व फलियां नहीं बनती। रतुआ तथा डाऊनी मिल्ड्यू रोगों के मिलेजुले धब्बे "स्टेग हैड" पर साफ दिखाई देते हैं।

सफेद रतुआ

मृदुरोमिल आसिता (डाऊनी मिल्ड्यू)

जब पौधे 15-20 दिन के होते है तब पत्तियों की निचली स्तह पर हल्के बैंगनी से भूरे रंग के धब्बे नजर आते हैं। बाद में ये धब्बे मिलकर बड़े आकार के हो जाते हैं। यह रोग फूलों वाली शाखाओं पर अधिकतर सफेद रतुआ के साथ ही आता है।

तना गलन (सक्लरोटीनिया स्टेम रॉट)

तनों पर लम्बे व भूरे जलसिक्त धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फंफूद की तह बन जाती है। उग्र आक्रमण यदि फूल निकलने या फलियाँ बनने के समय पर हो तो तने टूट जाते हैं और पौधें मुरझा कर सूख जाते हैं। रोगग्रस्त तने या तनों के भितर काले रंग के पिंड (स्कलरोशिया) बनते हैं।

मृदुरोमिल आसिता

सामूहिक उपचार

बीज उपचार :

- तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम बाविस्टिन प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें।

छिड़काव कार्यक्रम :

- आल्ट्रनेरिया ब्लाईट, सफेद रतुआ या डाऊनी मिल्ड्यू के लक्षण दिखते ही डाइथेन एम-45 का 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव फसल पर दो बार 15 दिन के अंतर पर करें।
- जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर वर्ष होता है वहां बिजाई के 40-50 दिन के बाद बाविस्टिन का 0.1 प्रतिशत की दर से छिड़काव जरूर करें।

अन्य उपाय :

- स्वस्थ, साफ और प्रमाणित बीज ही बोएं।
- पिछली फसल के रोगग्रस्त अवशेष जला दें।
- तना गलन रोगग्रस्त खेतों में गेहूं या जौं का फसल चक्र अपनाएं।
- राया की बिजाई समय पर (10-25 अक्टूबर) करने से आल्ट्रनेरिया ब्लाईट, रतुआ और डाऊनी मिल्ड्यू रोगों का प्रकोप कम होता है।
- खेत में पानी खड़ा न रहने दें अन्यथा नमी रहने से विशेषकर तना गलन रोग का प्रकोप अधिक हो जाता है।

तना गलन

डा. कुशल राज, पौध रोग वैज्ञानिक, एवं डा. राजबीर गर्ग वरिष्ट सस्य वैज्ञानिक

कृषि विज्ञानं केन्द्र, उझा, पानीपत

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विविद्यालय, हिसार